प्रसाद जी के नाटकों में आर्येतर संस्कृतियों का निरूपण

डॉ पूजा धमीजा
शोध निर्देशक
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
टाँटिया विश्वविद्यालय
श्रीगंगानगर (राज.)

हिमाँशु शर्मा
शोधार्थी
टाँटिया विश्वविद्यालय
श्रीगंगानगर (राज.)

भारतीय संस्कृति की बहुरंगता को प्रदर्शित करना भी प्रसाद जी का उद्देश्य रहा है। समरसता की भावना का प्रतीक भारतीय संस्कृति अनेक संस्कृतियों को अपने अस्तित्व में समाहित किया हुए है। प्रसादजी ने नाटकों में अप्रत्यक्ष रूप से आर्य एवं आर्येतर संस्कृतियों के जीवन मूल्यों का तुलनात्मक समीक्षा की गई है तथा आर्येतर संस्कृतियों का चित्रण के माध्यम भारतीय संस्कृति की स्वरुप एवं मूल्यों की श्रेष्ठता का प्रतिपादन हुआ है।

नाग संस्कृति

प्रसाद जी ने अपने दो नाटकों नाटकों विशाख एवं जन्मेजय का नागयज्ञ में नाग संस्कृति के चित्र उकेरे हैं। प्रसाद जी द्वारा रचित जन्मेजय का नागयज्ञ नाटक दो आर्य एवं नाग संस्कृतियों के संघर्ष एवं अंतत: समायोजन के कथानक पर आधारित है। यह नाटक भारतीय संस्कृति के विकास क्रम को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। महाभारत युद्ध के समय एवं युद्ध की विनाश लीला के पश्चात क्षीण हो चुके भारत में आर्य एवं नाग जाति परस्पर द्वंद्व एवं संघर्ष की स्थिति में थीं। दोनों में नैतिक धार्मिक एवं दार्शनिक विचारधारा एवं मूल्य के स्तर पर अंतर था। नाग संस्कृति के गौरवशाली अतीत का उद्‌बोध करने वाला मनसा का यह कथन नाग जाति को आर्य संस्कृति के समक्ष स्थापित करता है,"क्यों क्या तुमने यही समझ रखा है कि नाग जाति सदैव से इसी गिरी अवस्था में है? क्या विश्व के रंगमंच पर नागों ने कोई स्पृहणीय अभिनय नहीं किया? क्या उनका अतीत भी वर्तमान की भांति अंधकारपूर्ण था? सरमा, ऐसा न समझो । आर्यों के सदृश्य उनका भी विस्तृत राज्य था, उनकी भी एक संस्कृति थी।" १

नाग जाति का अपनी व्यवस्थित शासन तथा संस्कृति थी। वह भारत की ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्त्व रखने वाली सरस्वती नदी द्वारा पोषित कुरुक्षेत्र के क्षेत्र पर भारतवंशी राजाओं के आधिपत्य से पूर्व निवास करती थी ष्हाँ सरमा, मुझमें भी ओजपूर्ण नाग रक्त है। इस मस्तिष्क में अभी तक राजेश्वरी होने की कल्पना खुमारी की तरह भरी हुई है। वह अतीत का इतिहास याद करो, जब सरस्वती का जल पीकर स्वस्थ और पुष्ट नाग जाति कुरुक्षेत्र की सूंदर भूमि का स्वामित्व करती थी । जब भरत जाति के क्षत्रियों ने उन्हें हटने को विवश किया। २

जन्मेजय का नाग यज्ञ नाटक में नाग अपनी स्वतंत्रता के लिए अपने से कहीं अधिक शक्तिशाली आर्य जाति के सम्राट जनमेजय की सेना से भी अपने प्राणों की परवाह किए बिना निर्भीकता से युद्ध करते हैं। बंदी बनाये जाने के उपरांत भी निर्भीकता से नागों में स्वतंत्रता एवं स्वछंदता के मूल्यों को एक नाग योद्धा का कथन स्पष्ट कर देता है, ष्अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के विचार से मैं मरने के लिए रणभूमि में आया था। यदि यहाँ आकर बंदी हो गया, तो क्या मैं लज्जित होऊँ ? हाँ, दु:ख इस बात का है कि तुम्हें मार कर नहीं मर सका..३ नाग योद्धाओं की निर्भीकता प्रमाण यह कथन है "---होगा

रणचंडी का विकट तांडव, आर्यों का स्वाहा गान और हमारे जीवन की आहुति ! नाग मरना जानते हैं । अभी वे हीनपौरुष नहीं हुए हैं। जिस दिन वे मरने से डरने लगेंगे, उसी दिन उनका नाश होगा। जो जाति मरना जानती रहेगी, उसी को पृथ्वी पर जीने का अधिकार रहेगा।" ४

विशाख नाटक में नाग संस्कृति की पतित अवस्था का चित्र उकेरा गया है, जिसमें नागों की भूमि व् सम्पति उनसे बलात छीन कर कश्मीर के क्षत्रिय शासक नरदेव द्वारा बौद्ध विहारों को दान कर दी जाती है। इरावती का कथन से स्पष्ट होता है, "देव! हम नागों की सारी भू सम्पत्ति हरण करके इस क्षत्रिय राजा ने एक बौद्ध मठ में दान कर दिया।" ५ तथा नागों को अपने सरदार सुश्रवा के साथ वनों में निर्वासित जीवन जीना पड़ता है। नाग संस्कृति की पतित अवस्था इरावती का कथन स्पष्ट कर देता हैं," हम लोग तब से अन्नहीन, दीन दशा में, इस कष्टमयी स्थिति में जीवन व्यतीत कर रहीं हैं। इन क्षेत्रों का अन्न यदि गिरा पड़ा भी कभी बटोर ली जाती हूँ, तो कभी डर कर, छिप कर।" ६

प्रसाद जी ने इसी नाटक में जहाँ एक और नाग संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों की चर्चा की है वहीं इसी नाग संस्कृति के दुर्गुणों का चित्रण भी किया है। नाग संस्कृति में विद्यमान असभ्यता, अमानवीयता, उच्छृंखलता तथा मूल्यहीनता का चित्रण तक्षक, अश्वसेन तथा मनसा के चरित्र के क्रोध, प्रतिशोध, हिंसा, छल, प्रवंचना, कपट, अत्याचार आदि दुर्गुणों के माध्यम से किया गया है। तक्षक का यह कथन नाग संस्कृति की हिंसाप्रियता का सूचक है,"मैं अपने शत्रुओं को सुखासन पर बैठे, साम्राज्य का खेल खेलते, देख रहा हूं और स्वयं दस्युओं के समान अपनी ही धरणी पर पैर रखते हुए भी कांप रहा हूं। प्रलय की ज्वाला छाती में धधक उठती है! प्रतिहिंसे! तू बलि चाहती है, तो, ले मैं दूंगा। छल, प्रवंचना, कपट, अत्याचार सभी तेरे सहायक होंगे––हाहाकार, क्रंदन और पीड़ा तेरी सहेलियां बनेगी। रक्तरंजित हाथों से तेरा अभिषेक होगा। शून्य गगन, शव गंध पूरित धूम से भरकर तेरी धूपदानी बनेगा।"७

नाटक में नागराज तक्षक सरमा की हत्या के लिए उद्धत हो जाता है तथा तक्षक का पुत्र अश्वसेन दामिनी की अपनी काम क्षुधा पूर्ति का साधन मात्र समझ कर शालीनता की सीमाओं का उल्लंघन कर जाता है जिससे नागजाति में व्याप्त विलासिता, क्रूरता तथा नारी के प्रति भोगवादी मूल्यों का संज्ञान होता है तथा नाटक में तक्षक युद्ध जन्मेजय को सीधे युद्ध में परास्त कर पाने में असफल होने पर कायरता का परिचय देता हुआ वपुष्टमा के अपहरण की योजना बनता है। नागकन्या मनसा नाग जाति के प्रतिशोध एवं क्रोध की प्रतिमा है, वह किसी प्रकार नागजाति के पतन का प्रतिशोध आर्यजाति के विनाश से लेना चाहती है। इसके विपरीत नाग जाति की स्त्री पात्र जातीय गौरव, त्याग, वीरता, साहस, प्रेम, शांति एवं नारी सम्मान जैसे मूल्यों को धारण करती हैं। मनसा नाटक के अंत आर्य एवं नाग जाति के संघर्ष में हुए भीषण रक्तपात तथा नाग वीरों की मृत्यु से द्रवित हो शांति एवं संधि की पक्षधर हो तक्षक से भी युद्ध मार्ग का त्याग करने का आग्रह करती है। वह तक्षक को सरमा की हत्या के प्रयास के समय भी कुकृत्य करने से रोक लेती है। मणिमाला भी प्रेमभाव स्थापित कर दोनों जातियों के मध्य रक्तरंजित द्वंद्व को समाप्त करना चाहती है।

ग्रीक संस्कृति

ग्रीक संस्कृति के चित्रण में प्रसाद जी ने ग्रीक पात्रों के गुण–दोषों, क्रियकलापों तथा वक्तव्यों के रूप में किया है जिससे ग्रीक पात्रों के चरित्रों के माध्यम से ग्रीक संस्कृति के स्वरुप तथा मूल्यों का निदर्शन होता है। परन्तु ग्रीक संस्कृति के निरूपण के मूल में भारतीय सस्कृति एवं जीवन मूल्यों की श्रेष्ठ को सिद्ध करना ही रहा है।

सेल्यूकस द्वारा विश्राम चंद्रगुप्त कर रहे चंद्रगुप्त की व्याघ्र से रक्षा तथा विश्राम हेतु आपने शिविर में चलने तथा आतिथ्य ग्रहण करने का आग्रह

ग्रीक संस्कृति के मानवीय पक्ष को दर्शाता है। सिंधु तट पर एनिसक्रिटीज़ का दंड्यायन के प्रति शालीन एवं संयमित व्यवहार ग्रीक संस्कृति की विद्वानों प्रति आदर भाव का सूचक है। कार्नेलिया का भारतीय संगीत शास्त्र में पारंगत होना ग्रीक संस्कृति की संगीतप्रियता का सूचक है। रामेश्वरलाल खंडेलवाल के अनुसार ष्ग्रीक वीरता व गुणग्राहकता के प्रति प्रसाद के मन में सम्मान है। विरोचित व्यवहार, मैत्री कामना, अपने स्नेही के सम्मान की रक्षा करने वाले के प्रति मृदुल भाव, आत्मसम्मान के लिए प्राण देने की तत्परता, वीर की वीरोचित सराहना, वीरता पर विस्मय–विमुग्ध होना आदि विशिष्ट गुण ग्रीक पात्रों के आचरण व्यवहार के माध्यम से लेखक ने विस्तार के साथ दिखाए हैं।८

भारतीय आर्य संस्कृति के मूल्यों की आदर्शपरकता, मानवीयता एवं श्रेष्ठता को सिद्ध करने के लिए प्रसादजी ने चन्द्रगुप्त नाटक में ग्रीक संस्कृति के अमानवीयता, दुर्दांतता एवं अनाचार को प्रदर्शित किया है, जिसमें ग्रीक (यवन) निरीह जनता की हत्या, लूटमार, हिंसा आदि कर ग्रीक संस्कृति का नकारात्मक चित्र प्रस्तुत किया। ग्रीक सैनिक का सिंधु तट पर सैनिक मर्यादा एवं स्त्री सम्मान का उल्लंघन कर अलका से मानचित्र छीनने का प्रयत्न निरंकुशता तथा शक्ति मद का द्योतक है। सिंहरण ग्रीक सैनिक सभ्यता पर कटाक्ष करता हुआ कहता है, ष्यवन, क्या तुम्हारे देश की सभ्यता तुम्हें स्त्रियों का सम्मान करना नहीं सिखाती? क्या तुम सचमुच बर्बर हो। ९

कार्नेलिया द्वारा फिलिप के प्रेमाग्रह को ठुकराने पर फिलिप द्वारा कार्नेलिया के किया गया दुर्व्यवहार संस्कृति की नारी के प्रति भोगवादी दृष्टि का सूचक है। ग्रीक संस्कृति के अमानवीय तथा बर्बर पक्ष को रामेश्वर शुक्ल ने अपने शब्दों इस प्रकार अभिव्यक्त है, ”हत्या व लूटपाट से भरी साम्राज्य लिप्सा उत्कोच देना, निरीह जनता का अकारण नृशंस वध, खड़ी खेतिया उजाड़ना, लूटपाट को साम्राज्य विस्तार के साधन के रूप में देखना, बलात्कार करना, लूटकर स्त्रियों को बंदी या दासी बनाना, ललनाओं के साथ धृष्ट व्यवहार करना, स्त्री पर हाथ उठाना या उसे पकड़ना, स्त्रियों के प्रति असम्मान प्रदर्शित करना, भगोड़े के समान आचरण करना, गांव को जलाना, अपनी प्रतिज्ञा भंग करना तथा अचेत सेना पर कदर्य आक्रमण करना, पवित्र रणनीति को भुलाकर आतंक फैलाना आदि आचरण ग्रीक जाति के व्यवहार का पक्ष प्रस्तुत करते हैं। १०

शक–हूण संस्कृति

प्रसाद जी ने शकों एवं हूणों संस्कृति के क्रूरता, नृशंसता एवं बर्बरत अमानवीय मूल्यों का चित्रांकन स्कंदगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी नाटक में किया गया है। शक एवं हूण के विद्याकेंद्रों के विध्वंस, नारियों के शीलभंग, बच्चों की हत्या, नरमांस भक्षण जैसे पशुवत व्यवहार के निदर्शन के द्वारा सांस्कृतिक मूल्यहीनता का चित्रण किया हैं। स्कंदगुप्त नाटक में शकों के आक्रमण से भारत के उत्तरापथ की दुर्दशा, हूणों की नृशंसता एवं अमानवीयता का भयावह चित्रांकन स्कंदगुप्त नाटक में हुआ है, जहाँ हूण निरीह जनता पर अत्याचार की सभी सीमाएँ लाँघ जाते हैं। धन एवं संपति की लूट के समय हूण सेनापति का बालकों एवं स्त्रियों पर अत्याचार कथन इस स्थिति को स्पष्ट करता है ”इन बालकों को तेल से भीगा हुआ कपडा डाल कर जलाओ और स्त्रियों को गरम लोहे से दागो।” ११

प्रसाद जी ने अपने नाटकों में शकों व हूणों के साँस्कृतिक मूल्यों में बर्बरता, नृशंसता तथा अमानवीय मूल्यों की प्रबलता का चित्रण करते हुए भारतीय संस्कृति को श्रेष्ठ सिद्ध किया है। ध्रुवस्वामिनी नाटक में शकराज के चरित्र के माध्यम से शक संस्कृति के असभ्य, विलासी, प्रतिशोधी एवं दुराचारी स्वरूप का चित्रण किया गया है।शकराज का यह कथन उसकी असभ्य एवं बर्बर मनोवृति का परीचायक है,” हम लोग गुप्तों की दृष्टि में जंगली, बर्बर, और असभ्य हैं, तो मेरी प्रतिहिंसा भी बर्बरता के ही अनुरूप होगी। हां, मैंने अपने शूर सामंतों के लिए भी स्त्रियां मांगी थी।” १२ हूण सोने के लोभ से गोद के

बच्चों को छीनकर शूल परके मांस की तरह सेंकते हैं। हूण लुटेरे हैं। वे लोथे नोचते हैं तथा अर्थ लोभी पिशाच हैं। १३

चीनी संस्कृति

चीनी संस्कृति का अत्यंत लघु निरूपण राज्यश्री नाटक में सुएनच्यांग पात्र के चरित्र के द्वारा हुआ है वह धर्मानुरागी, अध्ययनशील तथा शांति का पक्षधर है। धर्म एवं शांति सबसे बड़ा धन है। डाकू विकटघोष द्वारा सुएन च्यांग से धन मांगने पर वह कहता है, "दस्युराज! मैं रुपये लेकर नहीं आया हूँ। मेरे पास थोड़ा सा धर्म और कुछ शांति है—तुम चाहते हो लेना?" १४ राज्यश्री के साथ उसके संवादों में चीनी संस्कृति के नारी के प्रति सम्मान के भावों का अनुमान सहज रूप से लगाया जा सकता है "सर्वस्व दान करने वाली देवी! में तुम्हें कुछ दूँ—यह मेरा भाग्य! तुम्हीं मुझे वरदान दो की भारत से जो मैंने सीखा है, वह जाकर अपने देश में सुनाऊँ"। १५ प्रसाद जी द्वारा चीनी संस्कृति के चित्रण में चीनी संस्कृति का मूल्य आधार पर भारतीय संस्कृति से साम्य दिखलाया है। रामेश्वर खण्डेलवाल के इस विषय पर विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ष्चीनी संस्कृति की एक बड़ी ऐतिहासिक विशेषता — धर्म प्रेम, ज्ञान पिपासा की एक संक्षिप्त सी झलक प्रसाद ने 'राज्यश्री' में धर्म और शांति के प्रेमी सुएन च्वांग में दिखाई है स्त्री सम्मान गुण ग्राहक था ज्ञान प्रचार आदि की भावनाएं सुएनच्वांग के चरित्र में द्रष्टव्य हैं। यह गुण भारतीय संस्कृति के विरोध में ना होकर उनके मेल में ही हैं, यह स्पष्ट है। १६

इस प्रकार जहाँ प्रसाद जी के नाटकों में भारतीय आर्य संस्कृति के उज्ज्वल, उद्दात एवं उत्कृष्ट चित्रण प्रस्तुत किए गए हैं वहीं प्रसाद जी ने अपनी जिज्ञासु, मेधावी व विस्तृत अन्वेषण मनोवृति परिचय देते हुए इतिहास के विविध कालखंडों में भारतीय संस्कृति के सम्पर्क में आई आर्येतर संस्कृतियों के जीवन मूल्यों, कार्य व्यवहारों तथा भारतीय संस्कृति के साथ उनके वैचारिक साम्य एवं वैषम्य का अप्रत्यक्ष तुलनात्मक एवं कलात्मक आंकलन करने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ

१ प्रसाद, जन्मेजय का नागयज्ञ, अंक —१, दृश्य —१ पृष्ठ—१
२ प्रसाद, जन्मेजय का नागयज्ञ, अंक —१, दृश्य —१, पृष्ठ—१
३ प्रसाद, जन्मेजय का नागयज्ञ, अंक—२, दृश्य—७, पृष्ठ—४७
४ प्रसाद, जन्मेजय का नागयज्ञ, अंक—२, दृश्य —७, पृष्ठ—४७
५ प्रसाद, विशाख, अंक—१, दृश्य— १, पृष्ठ—५
६ प्रसाद, विशाख, अंक—१, दृश्य— १, पृष्ठ—५
७ प्रसाद, जन्मेजय का नागयज्ञ, अंक—१, दृश्य —५, पृष्ठ—१६
८ खंडेलवाल, रामेश्वरलाल, जयशंकर प्रसादरू वस्तु और कला, पृष्ठ १८८
९ प्रसाद, चन्द्रगुप्त, अंक —१ ,दृश्य—६, पृष्ठ—६८
१० खंडेलवाल, रामेश्वरलाल, जयशंकर प्रसादरू वस्तु और कला, पृष्ठ १८९
११ प्रसाद, स्कंदगुप्त, अंक —१,दृश्य —६, पृष्ठ—६५
१२ प्रसाद, ध्रुवस्वामिनी, अंक—२, पृष्ठ —३३
१३ खंडेलवाल, रामेश्वरलाल, जयशंकर प्रसादरू वस्तु और कला, पृष्ठ १८९
१४ प्रसाद, राज्यश्री, आज—३, दृश्य —४, पृष्ठ—२७
१५ प्रसाद, राज्यश्री, आज—४, दृश्य —४, पृष्ठ—३३
१६ खंडेलवाल, रामेश्वरलाल, जयशंकर प्रसादरू वस्तु और कला, पृष्ठ १९०